MAHARAJA COLLEGE ,ARA

PG @ SEM- III

CC-13 : समकालीन हिंदी कविता

Unit – 4 मुक्तिबोध – अन्धेरे में

फैन्टेसी

मुक्तिबोध की लंबी कविता को समझने के लिए सबसे पहले फैन्टेसी को जानना जरूरी है। इसे जाने बिना मुक्तिबोध को समझना मुश्किल ही नहीं असंभव है। यह काव्य में एक टेकनीक के रूप में प्रयुक्त होता है। अक्सर लंबी कविताओं में कैनवास की व्यापकता को समेटने और उसकी गति में त्वरा पैदा करने के लिए रचनाकार इसका सहारा लेते हैं। फैन्टेसी यथार्थ के बिखरे हुए असंबद्ध चित्रों को एक सूत्र में पिरोने की एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसे रचनाकार अपने मनोलोक में, स्वप्नों, दिवा स्वप्नों या भावचित्रों के सहारे मूर्तरूप देकर उसे एक आभासित यथार्थ का रूप देता है।

फैन्टेसी शब्द की उत्पत्ति ग्रक शब्द 'फैन्टेसिया' से हुई

है, जिसका अर्थ अमूर्त को दृश्य बनाना है। जो वस्तु है ही नहीं उसे इस टेकनीक के माध्यम से एक काल्पनिक लोक की रचना कर अनुभव करा देना। विश्व साहित्य कोश में फैन्टेसी को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि 'फैन्टेसी की क्रियाशीलता में ऐसे वातावरण या चरित्र उपस्थित होते हैं जो मनुष्य जीवन की सामान्य परिस्थितियों में असंभव माने जाते हैं। फैन्टेसी में भौतिक शास्त्र के नियमों की सीमा खत्म हो जाती है, पशु या मानव जीवन का अंतर मिट जाता है, मनुष्य स्वभाव की आधारशिला टूटने लगती है और काल्वनिक जीव समस्त काल्पनिक मूल्यों को अव्यवस्थित कर देते हैं। विचित्र या अमानवीय तत्वों से भरपूर कार्य अधिकतर फैन्टेसी की सीमा में आते है।

फैन्टेसी मूलतः मनोविज्ञान का शब्द है। इसका संबंध स्वप्न और अवचेतन मन में घटित होने वाली घटनाओं की विघटित और बेतरतीब विंबावलंबियों से है। साहित्य या काव्य में यह एक टेकनीक के रूप में प्रयुक्त होता है।

क्रमशः –